## विचार बिन्दु

**मेरे दोस्त किसी चीज़ को कुरूप ना कहो, सिवाय उस भय के जिसकी मारी कोई आत्मा स्वयं अपनी स्मृतियों से डरने लगे। –खलील जिब्रान**

# AI (Artificial Intelligence), AI ( Aam Insaan) के लिये काम आए तो कितना अच्छा हो

17 से 20 फरवरी 2026 के दौरान भारत द्वारा पूरे विश्व की सबसे बड़ी AI summit आयोजित की गई। इसमें कई राष्ट्र अध्यक्षों के साथ ही लगभग 100 देशों के आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विशेषज्ञों ने भाग लिया और इसके विभिन्न पहलुओं पर गहन चर्चा की। इस सफल आयोजन के लिए भारत सरकार बधाई की पात्र है, इसके बावजूद कि गलगोटिया यूनिवर्सिटी ने चीन द्वारा विकसित रोबोट कुत्ते, ओरियन को अपना बताते हुए प्रस्तुत किया, जिससे काफी शर्मिंदा होना पड़ा।

इसके अतिरिक्त, युवा कांग्रेस के सदस्यों द्वारा किया गया बिना शर्ट के बेहूदा प्रदर्शन भी कोई अच्छा निर्णय नहीं था। इससे विश्व में भारत की छवि पर विपरीत प्रभाव पड़ा। यह बात भी सही है कि अब भारत द्वारा एआइ पर अधिक बल दिया जा रहा है, जबकि इस क्षेत्र में चीन हमसे बहुत-बहुत आगे निकल चुका है। फिर भी यह अवश्य कहा जाना चाहिए कि इस क्षेत्र में विकास की असीम संभावनाओं को देखते हुए सरकार ने इस पर इसे उच्च प्राथमिकता तो दी है।

अब प्रश्न यह उठता है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का लाभ देश के किस वर्ग को मिलता है? क्या इसका लाभ वही ले पाएंगे जो पहले ही विकास की दौड़ में आगे हैं, सक्षम है और समर्थ हैं? यदि ऐसा हुआ तो देश में असमानता, जो पहले ही बहुत अधिक है, और अधिक बढ़ जाएगी। इससे देश में असंतोष बढ़ने की संभावना रहेगी। सरकार को यह समझना होगा कि एआइ तो एक हथियार मात्र है। इसके माध्यम से हम क्या हासिल करना चाहते हैं, यह सरकार की प्राथमिकताओं पर निर्भर करेगा।

देश में वैज्ञानिकों और तकनीकी विशेषज्ञों की कोई कमी नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि इन्हें हमारे देश के वंचित वर्ग की समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए एआइ का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित किया जाए। पाठकों के लिए यह जानना दिलचस्प होगा कि भारत में शोध एवं विकास पर बहुत ही कम धनराशि खर्च की जाती है, जब कि विकसित देश इस पर हमसे कई गुना अधिक खर्च करते हैं। चीन भी इस क्षेत्र में भारत से बहुत अधिक व्यय कर रहा है और यही इस क्षेत्र में उसकी अप्रतिम सफलता का आधार भी है। सातवें दशक के अंत में चीन ने शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी और उसका उसे भरपूर मिल रहा है। पूरे विश्व में उसके वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञ छाए हुए हैं। एक सर्वे में यह बताया गया कि कुछ वर्षों पूर्व जहां 64 महत्वपूर्ण टेक्नोलॉजी में से 57 में अमेरिका प्रथम स्थान पर था वहीं यह केवल 6 में प्रथम स्थान पर रहा है और 54 में चीन ने प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया है। एक प्रकार से तकनीकी विशेषज्ञता के महत्वपूर्ण क्षेत्र में चीन ने सभी को पीछे छोड़ दिया है, यहां तक कि अमेरिका भी उससे बहुत पीछे हो गया है।

अगर हम भारत के संदर्भ में बात करें तो हमें इसका उपयोग अब आम इंसान (एआइ) के लिए करने की जरूरत है। इनमें अधिकतर वे लोग हैं जो हाशिए पर हैं। इनकी वास्तविक स्थिति का अंदाज़ा किसी भी गांव में जाने पर अथवा किसी भी शहर की कच्ची बस्ती में कुछ देर रुकने से ही लग जाता है। ये वे लोग हैं जिनके बच्चों को या तो शिक्षा नहीं मिलती है या मिलती भी है तो कुछ इस प्रकार की, कि उसका जीवन में कोई उपयोग नहीं है। उन्हें जिस सरकारी भवन में बैठकर पढ़ाई करनी होती है, वह कब ध्वस्त हो जाएगा और उनकी जान ले लेगा, इसकी आशंका सदैव बनी रहती है। इन लोगों के पास इंटरनेट की सुविधा का अर्थ ही नहीं है क्योंकि उनके गांव में बिजली कभी कभार ही आती है। इन्हें दूषित पानी पीकर अस्वस्थता की ओर धकेल दिया जाता है। इन्हें अपने गांव में पानी शुद्ध नहीं मिलने के कारण और स्वास्थ्य सुविधा न होने के कारण अपने जीवन का बहुत महत्वपूर्ण समय इन्हीं के जुगाड़ में बिता देना पड़ता है। यदि एआइ उनके लिए कुछ समस्याओं का हल खोज सके और उनके जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में कार्य कर सके तो भारत के संदर्भ में यह कहीं अधिक उपयुक्त होगा। अब तक केवल प्रशासनिक आधार पर उनकी समस्याओं का हल निकालने का प्रयास किया गया लेकिन ये सब भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ने के कारण वास्तव में इन लोगों का कुछ विशेष भला नहीं हो पाया। विभिन्न योजनाओं में भ्रष्टाचार के चलते ही करोड़ों रुपए की सरकारी राशि व्यर्थ चली जाती है, चाहे वह सड़क बनाने के लिए हो, भवन बनाने के लिए, पुल बनाने के लिए, या बांध बनाने के लिए। जब एआइ इतनी तरक्की कर ही रहा है तो फिर इसका उपयोग करके, क्या हम अपने सिस्टम में से भ्रष्टाचार को कम नहीं कर सकते हैं ? क्या इससे हम यह पता नहीं लगा सकते कि वास्तव में कौन गरीब है और किसको सरकारी सहायता की आवश्यकता है? क्या एआइ का उपयोग इस काम के लिए नहीं हो सकता कि गरीब बच्चों को लिए जहां शिक्षक उपलब्ध नहीं हो पा रहे हैं वहां पर एआइ के माध्यम से बच्चों को शिक्षा से जोड़ने का काम प्रभावी रूप से किया जाए।

> **कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि सरकारी धन के दुरूपयोग पर एआइ के प्रभावी उपयोग से कड़ा अंकुश लगाया जा सकता है। इससे वास्तविक पात्र शत प्रतिशत लोगों को विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत लाभ मिल सकेगा। सरकार में पैसे की कमी नहीं, अपितु उसके उपयोग पर कड़ी और सही मॉनिटरिंग की आवश्यकता है। यही काम एआइ की सहायता से बखूबी किया जा सकता है। आवश्यकता केवल इच्छा शक्ति की है। इसको कार्यान्वित करने के तो एआइ ने असीमित द्वार खोल दिए हैं।**

यदि जवाब देही का काम एआइ के माध्यम से बेहतर तरीके से हो जाए तो न केवल इससे प्रशासनिक व्यवस्था सुदृढ़ होगी अपितु इससे भ्रष्टाचार पर चोट करने में भी सहायता मिलेगी। एआइ के उपयोग के बाद भ्रष्ट नेता और अफसर की मनमानी पर अंकुश लगने की संभावना बनेगी। बिना किसी विलंब के एआइ के उपयोग से कई समस्याओं का हल निकालना संभव हो पाएगा।

अपराध नियंत्रण में एआइ का बहुत बड़ा उपयोग होने की संभावना है। ऐसा करने पर गरीब लोगों को शोषण से बचाए जा सकेगा और यदि किसी ने ऐसा किया भी तो उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई करना अवश्य ही संभव हो जाएगा।

मैं यह सोचता हूँ कि यदि हम एआइ का उपयोग निम्न समस्याओं का हल निकालने में कर सकें तो यह आम इंसानों की प्रगति अर्थात देश की सर्वांगीण प्रगति के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण होगा:–

एआइ से यह पता लगाना चाहिए कि जो लोग आयुष्मान योजना के अंतर्गत मुफ्त स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त करने के हकदार हैं, उनमें से कितनों को इसका लाभ मिला और जिन्हें नहीं मिला उसकी जानकारी तत्काल सबको उपलब्ध हो जाए। जिनके कारण लाभ नहीं मिला उनका विवरण भी तत्काल सार्वजनिक हो जाय तो भ्रष्टाचार करने की हिम्मत नहीं होगी।

जो बच्चे शिक्षा से वंचित हैं उनकी सही जानकारी मोहल्लावार, बटन दबाते ही मिल जाए तो संसाधनों का दुरुपयोग रोका जा सकेगा और सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ताओं को इस क्षेत्र में काम करने में सुविधा होगी। जो विद्यार्थी सरकारी योजना के अंतर्गत लैपटॉप, स्कूटी, साइकिल आदि प्राप्त करने के अधिकारी हैं, उन सबको यह सुविधा मिल जाए, इसे सुनिश्चित किया जा सकता है। एआइ की सहायता से सरकारी विद्यालयों में नामांकित बच्चों के शैक्षिक स्तर का आंकलन करना संभव है और इसके आधार पर शिक्षकों को जवाबदेह बनाया जा सकेगा। शिक्षकों के स्थानांतरण और पदोन्नति में भी इसके आधार पर एआइ को काम में लिया जा सकता है।

हाल ही में साइबर फ्रॉड के अनेक मामले सामने आ रहे हैं। क्या इन्हें रोकने में एआइ की मदद नहीं ली जा सकती?

बैंकों से लिए गये ऋण का सदुपयोग हुआ या नहीं यह पता करना सरल है, एआइ और अन्य तकनीकों का उपयोग करके।

श्रमिकों, विद्यार्थियों, कृषकों, महिलाओं के लिए अनेक योजनाएं सरकार द्वारा चलाई जा रही हैं किंतु घोर भ्रष्टाचार के कारण वास्तविक पात्र तो वंचित रह जाते हैं और तिकड़मबाज लोग, भ्रष्ट सरकारी अधिकारियों, कर्मचारियों से मिलकर सरकारी पैसे को चूना लगाने में सफल हो जाते हैं। इनकी पहचान एआइ के माध्यम से करना न केवल संभव, अपितु आवश्यक भी है।

अनेक प्रभावशाली संपन्न लोग, गरीब बनकर, गरीबों के लिए बनी योजनाओं का पैसा हड़प लेते हैं। इस पर अंकुश लगाया जा सकता है, ऐसे व्यक्तियों द्वारा किए गए खर्चे की एआइ की सहायता से निगरानी करके। इससे इनकी संपन्नता सामने आ जाएगी।

कई लोग औद्योगिक क्षेत्रों में सस्ती ज़मीनें खरीद कर बिना उद्योग लगाए कुछ समय बाद इन्हें ऊंचे दामों में बेचकर गलत रूप से पैसा बना लेते हैं। इसे एआइ की सहायता से रोका जा सकता है, क्योंकि जिओ टैगिंग करके आवंटित भूखंड की मौके की वास्तविक स्थिति ज्ञात की जा सकती है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि सरकारी धन के दुरूपयोग पर एआइ के प्रभावी उपयोग से कड़ा अंकुश लगाया जा सकता है। इससे वास्तविक पात्र शत प्रतिशत लोगों को विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत लाभ मिल सकेगा। सरकार में पैसे की कमी नहीं, अपितु उसके उपयोग पर कड़ी और सही मॉनिटरिंग की आवश्यकता है। यही काम एआइ की सहायता से बखूबी किया जा सकता है।

आवश्यकता केवल इच्छा शक्ति की है। इसको कार्यान्वित करने के तो एआइ ने असीमित द्वार खोल दिए हैं।

आशा है, सरकार एआइ सम्मिट की सफलता को "Aam Insaan" (AI) की बेहतरी में काम लेगी। संक्षेप में कहें तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) का उपयोग AI यानि "(Aam Insaan)" के लिए करने का समय आ गया है। यदि हम ऐसा करने में सफल हो पाए तो इस सम्मिट की सार्थकता कई गुणा बढ़ जाएगी।

**–अतिथि सम्पादक,**
**राजेन्द्र भाणावत**
**( पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी )**

# मरुस्थल की धड़कन : पोकरण

## शौर्य, राजनीति और परमाणु शक्ति की ऐतिहासिक नगरी

जुगल किशोर बिस्सा

पश्चिमी राजस्थान की तपती रेत के बीच बसा पोकरण केवल एक कस्बा नहीं, बल्कि इतिहास, कूटनीति और राष्ट्रीय सुरक्षा का जीवंत प्रतीक है। राजपूत शौर्य की गाथाओं से लेकर आधुनिक भारत की परमाणु शक्ति तक, इस मरुस्थलीय नगरी ने हर युग में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है।

**रियासतकाल की गौरवगाथा: लालकिला और चम्पावत ठिकाना**

पोकरण की स्थापना लगभग 14वीं शताब्दी (1356 ई.) में मानी जाती है। यहाँ स्थित भव्य पोकरण लालकिला (बालागढ़) आज भी राठौड़ वीरता और स्थापत्य कला का अद्भुत उदाहरण है। राजपूत समाज के पोकरणा जाती, मारवाड़ के संस्थापक राव जोधा के वंश से जुड़े चम्पावत राठौड़ यहाँ के ठिकानेदार रहे। पोकरण ठिकाने को मारवाड़ दरबार (जोधपुर) में विशेष सम्मान प्राप्त था और स्थानीय प्रशासन में इसकी निर्णायक भूमिका मानी जाती थी। लाल पत्थर से निर्मित यह किला मरुस्थलीय स्थापत्य की श्रेष्ठ धरोहर है।

**व्यापारिक मार्ग का प्रमुख केंद्र – क**रियासत काल में पोकरण पश्चिमी व्यापारिक मार्गों का महत्वपूर्ण पड़ाव था। ऊँटों के कारवां यहाँ से सिंध, कंधार, काबुल और मध्य एशिया तक व्यापार करते थे। नमक, ऊन, मसाले और सूखे मेवों व सोना का व्यापार इस क्षेत्र की आर्थिक रीढ़ था। मरुस्थल में स्थित होने के बावजूद पोकरण व्यापारिक और सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र बना रहा।

**ब्रिटिश काल में राजनीतिक संपर्क** –19वीं शताब्दी में जब राजपूत रियासतों ने अंग्रेजों के साथ संधियाँ कीं, तब मारवाड़ राज्य भी ब्रिटिश संरक्षण में आया। पोकरण, मारवाड़ रियासत का

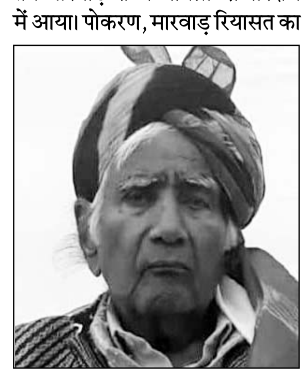

गुलाब सिंह रावलोत

प्रमुख ठिकाना होने के कारण अप्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश प्रशासनिक ढांचे से जुड़ा रहा। ठिकानेदारों और अंग्रेज अधिकारियों के बीच कूटनीतिक संपर्क होते रहे।

रियासतकालीन राजनीति में पोकरण की भूमिका रणनीतिक मानी जाती थी। हिंदुस्तान के पहले लोकतंत्र में इतिहास रचते हुए मेजर रिटायर्ड हड़वत सिंह रावलोत लोहारकी निवासी ने जैसलमेर के पहले 1952 में विधायक बनने का गौरव प्राप्त किया, वहीं उसी परिवार के गुलाब सिंह रावलोत ने 1993 में जैसलमेर जिले के विधानसभा में अपना दबदबा बनाए रखते हुए ऐतिहासिक मतों से भाजपा से निर्वाचित हुए। परमाणु स्थल के परमाणु नगरी के रूप में विश्व पहचान पोकरण को अंतरराष्ट्रीय पहचान तब मिली जब भारत ने यहाँ परमाणु परीक्षण किए। 18 मई 1974 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नेतृत्व में स्माइलिंग बुद्धा परीक्षण लोहारकी गांव में किया गया। 11 और 13 मई 1998 को प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व खेतोलाई गांव में पाँच सफल परीक्षण

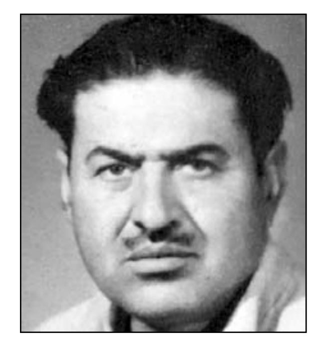

हड़वत सिंह रावलोत

किए गए। इन ऐतिहासिक घटनाओं के बाद पोकरण परमाणु नगरी के रूप में विश्व मानचित्र पर स्थापित हो गया और भारत की सामरिक शक्ति का प्रतीक बन गया।

**लोकतंत्र की राह: राजनीति का केंद्र** – स्वतंत्रता के बाद मारवाड़ रियासत भारतीय संघ में विलय हुई और राजस्थान राज्य के गठन के साथ पोकरण विधानसभा क्षेत्र अस्तित्व में आया। जैसलमेर जिले के गठन के बाद पोकरण क्षेत्र ने लोकतांत्रिक राजनीति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

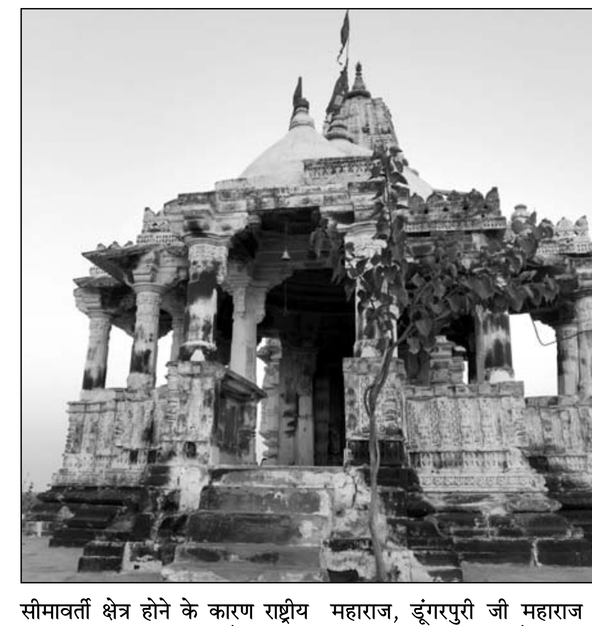

सीमावर्ती क्षेत्र होने के कारण राष्ट्रीय सुरक्षा, सेना की उपस्थिति और विकास कार्य यहाँ प्रमुख चुनावी मुद्दे रहे हैं। जातीय और सामाजिक समीकरण– राजपूत, ब्राह्मण, महाजन, मुस्लिम, ओबीसी और अनुसूचित जाति वर्ग– चुनावी परिणामों को प्रभावित करते हैं। अंतरराष्ट्रीय पाकिस्तान सीमा के निकट होने से रक्षा और विकास दोनों मुद्दे स्थानीय राजनीति का आधार बनते हैं। सेना, बीएसएफ और रक्षा परियोजनाओं की उपस्थिति स्थानीय अर्थव्यवस्था और राजनीतिक विमर्श को प्रभावित करती है।

**आस्था और संस्कृति का संगम** – पोकरण क्षेत्र धार्मिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। निकट स्थित तीर्थ नगरी रामदेवरा धाम देशभर के श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र है। स्थानीय परंपराओं में इसे भगवान परशुराम, चिड़िया नाथ जी महाराज, साघोजी महाराज, डूंगरपुरी जी महाराज की तपोभूमि भी माना जाता है। धर्म, शौर्य और राष्ट्रभक्ति की त्रिवेणी ने पोकरण की पहचान को विशिष्ट बनाया है।

**पोकरण का इतिहास तीन प्रमुख आयामों में स्पष्ट होता है–**

**राजपूत ठिकाना और किला संस्कृति**

**मरुस्थलीय व्यापार और रियासती राजनीति**

**भारत की परमाणु शक्ति और आधुनिक सामरिक पहचान**

आज पोकरण केवल जैसलमेर जिले का प्रवेश द्वार नहीं, बल्कि राजनीतिक चाणक्य नगरी, शौर्य भूमि और राष्ट्र गौरव का प्रतीक है। मरुस्थल की यह धड़कन आज भी इतिहास और आधुनिक युग के बीच सेतु बनकर खड़ी है।

**–जुगल किशोर बिस्सा,**
**वरिष्ठ पत्रकार**

# 'आवारा कुत्तों' पर सुप्रीम कोर्ट के जजमेंट के बाद जनमानस में उबाल

## पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली-एनसीआर के सभी आवारा कुत्तों को शेल्टर होम्स में बंद करने का आदेश दिया था, आदेश के बाद देशभर में डॉग लवर्स का आक्रोश फूट पड़ा

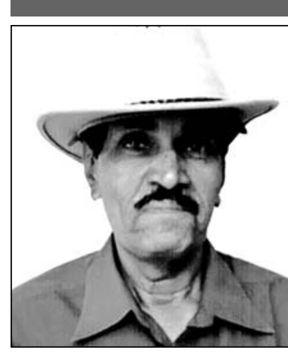

मिश्रीलाल पंवार

इन दिनों आवारा कुत्तों को लेकर देश में एक जंग छिड़ी हुई है। पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट की दो जजों की बेंच ने दिल्ली–एनसीआर के सभी आवारा कुत्तों को शेल्टर होम्स में बंद करने का आदेश दिया था। इस आदेश के बाद देशभर में डॉग लवर्स का आक्रोश फूट पड़ा। कईं जगह लोग सड़कों पर उतर आए। सोशल मीडिया पर सुप्रीम कोर्ट के आदेश का भारी विरोध होने लगा।

भारतीय संस्कृति को लेकर सुप्रीम कोर्ट के कई विवादित जजमेंट पहले भी आते रहे हैं, मगर कार्ट की अवमानना तथा जेल जाने के डर से लोग नहीं बोल पाते। मगर आजकल लोग हिम्मत दिखाने लगे हैं। इसी के परिणाम स्वरूप आवारा कुत्तों को लेकर सुप्रीम के दो जजों की बैंच के जजमेंट पर बोलने से नहीं डरे। जजमेंट के तुरंत बाद जगह जगह विरोध प्रदर्शन होने शुरू हो गए। सोशल मीडिया पर जीव हितेषियों ने हाहाकार मचा दिया। परिणाम यह हुआ कि दिल्ली–एनसीआर के सभी आवारा कुत्तों को शेल्टर होम्स में बंद करने के मामले में सुप्रीम कोर्ट के तीन जजों की बैंच बैठी और दो जजों की बेंच के आदेश में संशोधन किया। यह फैसला 11 अगस्त 2025 के उस आदेश के बाद आया, जिसमें सभी कुत्तों को शेल्टर में रखने की बात कही गई थी, जिसे 22 अगस्त 2025 को संशोधित कर दिया गया। जस्टिस विक्रम नाथ, जस्टिस संदीप मेहता और जस्टिस एनवी अंजारिया की बेंच ने स्वतः संज्ञान लेते हुए इस मामले में फ़ैसला सुनाया।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि हर शैक्षिक संस्थान, अस्पताल, स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स, बस स्टैंड, डिपो, रेलवे स्टेशनों इत्यादि की अच्छी तरह से बाड़बंदी ज़रूरी है, ताकि आवारा कुत्तों को घुसने से रोका जा सके। तीन न्यायाधीशों के इस जजमेंट के बाद डॉग लवर्स और पशु प्रेमी कार्यकर्ताओं को काफी राहत मिली।

जोधपुर निवासी मंजू दहिया ने कहा कि मनुष्य सैंकड़ो हजारों वर्षों से अन्य जीवों के साथ प्रेम पूर्वक रहता आया है। प्रकृति ने सबको जीने का समान अधिकार दिया है। अगर मनुष्य खुद को सर्वश्रेष्ठ समझने तथा अन्य जीवों को धरती का बोझ समझने की भूल करेगा तो ईश्वर कोरोना जैसी आपदा से मनुष्य को सजा देने में भी देरी नहीं करेगा। मनुष्य को ऊपर वाले के जजमेंट से थोड़ा डरना भी चाहिए। उन्होंने कहा कि आज भी सनातनी परंपरा में घर की माताएं पहली रोटी गाय के लिए तथा दूसरी रोटी कुत्ते के लिए निकालती है। दुनिया की किसी कोर्ट को यह अधिकार नहीं है कि गाय कुत्तों के लिए प्रथम रोटी देने वाली मां को जेल भेजने की बात करें। उन्होंने कहा कि मूक पशु बोल नहीं सकते, इसका मतलब यह तो नहीं कि उन्हें इंसाफ नहीं चाहिए।

इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि भारतीय संस्कृति में सब जीवों को बराबर का दर्जा दिया गया है। संत नामदेव और कुत्ते का प्रसंग आज दुनिया में किसी से छुपा नहीं है। महान संत नामदेव एक दिन भोजन बना रहे थे। उन्होंने रोटी बनाई और सोचा कि सब्जी बनाकर भगवान को भोग लगा लूं। उन्होंने रोटी बनाकर रखी ही थी कि एक कुत्ता अचानक से उनकी कुटिया में आया और रोटी लेकर भाग गया। संत नामदेव ने देखा तो विचार किया कि मैंने रोटी पर घी तो लगाया ही नही।

उनकी ईश्वर के प्रति अटूट आस्था और सर्वव्यापी दृष्टि थी। कुत्ता नामदेव की रोटियां लेकर भागा, तो वे हाथ में घी का कटोरा लेकर पीछे दौड़े। बोले, 'रोटी रुखी है, मत खाओ' कहते–कहते कुत्ते के पीछे दौड़ते रहे। कुत्ता आगे–आगे और संत नामदेव पीछे–पीछे भागने लगे। हाथ में कटोरा लिए संत नामदेव से तेजी से नहीं भागा जा रहा था। इसलिए वे जोर–जोर से आवाज भी लगाते रहे कि 'प्रभु, रोटी पर घी तो लगाने दो।'

दरअसल संत नामदेव हर जीव में भगवान का दर्शन करते थे। उन्हें उस कुत्ते में भगवान नजर आ रहे थे। रोटी में घी लगाकर खिलाना चाहते थे, ताकि प्रभु को रूखी रोटी न खानी पड़े। यह प्रसंग इस बात का प्रमाण है कि भारतीय संस्कृति में अन्य जीवों में भगवान का स्वरूप देखने की परम्परा रही है।

हिंदू धर्म में कुत्ते को भगवान भैरव (शिव के उग्र रूप) का वाहन माना गया है, जो सुरक्षा, निष्ठा और सतर्कता का प्रतिनिधित्व करते हैं। कुछ कथाओं में कुत्ते को यमदूत का सहचर और मृत्यु के बाद आत्माओं का मार्गदर्शक भी माना गया है। कुछ लोकमान्यताओं में कुत्तों को सीधे भैरव बाबा का अवतार भी माना जाता है। संक्षेप में, कुत्ता हिंदू धर्म में एक पवित्र प्राणी है, जो सुरक्षा, निष्ठा और संरक्षण का प्रतीक है।

कुत्ते को लेकर एक अन्य प्रसंग भी बहुत प्रसिद्ध है। महाभारत के अंत के बाद पाण्डव द्रौपदी के साथ स्वर्गारोहण यात्रा पर निकल पड़े थे। बद्रीनाथ के बाद जब पाण्डव हिमालय की पहाड़ियों में आगे बढ़ने लगे तो एक कुत्ता उनके साथ–साथ चल पड़ता है। मार्ग में द्रौपदी, सहदेव, नकुल, अर्जुन और भीम की मृत्यु हो गई। युधिष्ठिर पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ता है। कुत्ता भी उनके दुख में सहभागी बना रहा। कुछ विश्राम के बाद युधिष्ठिर स्वर्गारोहण यात्रा पर आगे के लिए रवाना हो गए। इस दौरान वह कुत्ता भी उनके साथ रवाना हो गया। दोनों चलते चलते सतोपंथ तीर्थ पहुंचे। वहां स्नान के बाद जब युधिष्ठिर कुत्ते के साथ यात्रा के अंतिम पड़ाव पर पहुंचे तो भगवान इंद्र अपने रथ के साथ उन्हें लेने आए। धर्मराज युधिष्ठिर के साथ एक कुत्ते को देखा तो इन्द्र ने कुत्ते को स्वर्ग में ले जाने से मना कर दिया। उन्होंने कहा कि कुत्ते के साथ स्वर्ग प्रवेश वर्जित है। उस कुत्ते को यहीं छोड़ना पड़ेगा।

इस पर धर्मराज युधिष्ठिर ने दृढ़ता से कहा कि जिसने अंतिम समय में मेरा साथ दिया, वफादारी निभाई, उसे अंतिम क्षण में नहीं छोड़ सकता। उन्होंने कहा, "स्वर्ग का सुख इस वफादार साथी को छोड़ने के दुख के आगे कुछ भी नहीं हैं"।

धर्मराज युधिष्ठिर की जीव के प्रति करुणा देखकर भगवान इन्द्र प्रसंन्न हो उठे। इतने में कुत्ते के रूप में मौजूद धर्मदेव अपने स्वरूप में प्रकट हों गए। उन्होंने बताया कि उन्होंने उनकी परीक्षा लेने के लिए कुत्ते का रुप धारण किया था। हिन्दू धर्म के ग्रन्थों में ऐसे अनेक उदाहरण भरे पड़े हैं, जिसमें कुत्ते तथा गाय को 'आवारा' नहीं बल्कि, 'पूज्यनीय' बताया गया है।

**-मिश्रीलाल पंवार,**
**( लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार है )**

## राशिफल मंगलवार 24 फरवरी, 2026

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, कृत्तिका नक्षत्र दिन 3:07 तक, ऐन्द्रयन योग प्रातः 7:24 तक, वणिज करण प्रातः 7:03 तक, चन्द्रमा आज वृष राशि में संचार करेगा।

**गृह स्थिति:** सूर्य–कुम्भ, चन्द्रमा–वृष, मंगल–कुम्भ, बुध–कुम्भ, गुरू–मिथुन, शुक्र–कुम्भ, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से प्रातः 7:03 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 3:07 तक है। ज्वालामुखी योग प्रातः 7:03 से दिन 3:07 तक है।

**श्रेष्ठ चौघड़िया:** चर 9:5 से 11:15 तक, लाभ–अमृत 11:15 से 2:05 तक, शुभ 3:30 से 4:35 तक।

**राहूकाल:** 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:00, सूर्यास्त 6:20

### मेष

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयास सफल रहेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

### वृष
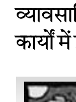
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आज व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

### मिथुन
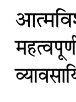
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। अनावश्यक धन खर्च होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में संयम रखना ठीक रहेगा।

### कर्क
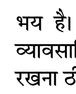
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

### सिंह
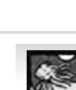
व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

### कन्या
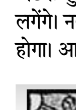
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

### तुला
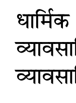
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज व्यावसायिक कार्यों के कारण मानसिक तनाव बना रहेगा।

### वृश्चिक
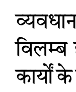
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में आज धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

### धनु
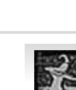
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

### मकर
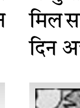
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

### कुंभ
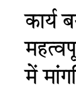
घर–परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

### मीन
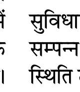
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।